P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-IV* December-2015

छायावाद और जयशंकर प्रसाद

अरविन्दर कौर
सहायक प्राध्यापिका,
हिन्दी विभाग,
ए. एस. कालेज,
खन्ना

सारांश

द्विवेदी युग के काव्य में भाषा और भाव दोनों दृष्टियों से स्थूलता का आभास मिलता है। जबकि इसके विपरीत प्रसाद जी ने छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्ति– सूक्ष्मभावाभिव्यक्ति का प्रदर्शन अपने काव्य में सफल रूप से किया है।

मुख्य शब्द : लाक्षणिक, सूक्ष्मभावाभिव्यक्ति, इतिवृत्तात्मक।

प्रस्तावना

प्रसाद जी ने अपने काव्य में द्विवेदी युग के इतिवृत्तात्मक और स्थूल भावों का खण्डल करके सूक्ष्मता पर अधिक ज़ोर दिया है। उन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर इस प्रकार के कई नवीन प्रयोग करके छायावादी काव्य के स्वरूप को निखारने का प्रयास किया है।

छायावादी कविता और जयशंकर प्रसाद

छायावादी कविता और प्रसाद पर विचार करने से पूर्व छायावादी कविता के स्वरूप पर विचार करना उपयुक्त प्रतीत होता है। छायावादी काव्य के स्वरूप को उभारने में कई बातें मुख्य रूप से उभर कर सामने आती हैं। इनमें प्रमुख रूप से व्यक्तिवाद की प्रधानता, प्रकृति चित्रण, अलौकिक प्रेम चित्रण, नारी के प्रति दृष्टिकोण, रूढ़िवाद और खोखली मान्यताओं का विरोध, सूक्ष्मता भरी भारा का प्रयोग, प्रतीक, अलंकार, छन्द, विरह की भावना आदि का समावेश मिलता है।

छायावादी काव्य के आरम्भ से पूर्व द्विवेदी युग के कवियों में केवल सामाजिकता ही दिखाई देती है। वे अपने–आप को समाज से अलग न मान कर ऐसे काव्य का सृजन करते थे, जिसमें समाज का उद्धार निहित रहता था। उनकी कविता में सामाजिकता और उपदेशात्मकता का विशेष महत्त्व रहता था। इसके विपरीत छायावादी कवियों में अपने व्यक्तित्व को निखारन का अनूठा प्रयास उपलब्ध होता है। छायावादी कवि को अपने व्यक्तित्व के प्रति अगाध विश्वास था और उसने बड़े उत्साह से काव्य के भाव और कला पक्ष में निज व्यक्तित्व का प्रदर्शन किया। अहं भावना छायावादी काव्य की मुख्य विशेषता रही।

जहाँ एक ओर द्विवेदी युग में प्रकृति केवल वर्ण्य–विषय ही बन कर रह गई, वहाँ छायावाद में प्रकृति चित्रण में मानवीय भावनाओं का आरोपण हुआ। छायावादी कवियों ने प्रकृति को जीवन्त रूप में प्रस्तुत किया। इस काव्य में प्रकृति चित्रण मानवीय भावनाओं से ओत–प्रोत दिखाई देता है।

प्रकृति चित्रण के साथ–साथ छायावादी कवियों में नारी के प्रति जो दृष्टिकोण था, वह द्विवेदी युग में नाम–मात्र ही दिखाई पड़ता है। द्विवेदी युगीन कवियों ने नारो की स्वतन्त्रता अर्थात् उसके स्वतन्त्र व्यक्तित्व को काव्य में बहुत सीमित ढंग से चित्रित किया है जबकि छायावादी कवियों ने नारी के सभी गुणों –श्रद्धा, त्याग, ममता, करुणा, प्रेम आदि सभी का उच्चतम रूप में गुणगान किया है। प्रसाद जी के महाकाव्य 'कामायनी' में भरी नारी के गुणों का उल्लेख मिलता है। वे कहते हैं :–

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में,
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।''

द्विवेदी युग की भाषा स्थूलता लिए हुए है; जबकि छायावादी युग के काव्य की भाषा सूक्ष्म भावाभिव्यक्ति करने में पूर्ण समर्थ है। भाषा की सूक्ष्मता के साथ–साथ इस काव्य में प्रेम का आलम्बन रूप, उसका सौन्दर्य छायावादी काव्य की मुख्य प्रवृत्ति स्वीकार की गई है। इसके अतिरिक्त इस काव्य में भिन्न–भिन्न अलंकारों, छन्दों, बिम्बों, प्रतीकों आदि का नवीन रूप से प्रयोग किया गया है जो कि द्विवेदी युग की प्रवृत्तियों से बिल्कुल भिन्न है, इसमें नवीनता का समावेश अधिक प्राप्त होता है।

छायावादी काव्य में जहाँ एक तरफ प्रेम की भावनाओं को उभारा गया वहीं दूसरी ओर विरह की भावना का भी सजीव चित्रांकन किया गया। छायावादी कवियों ने सीधी–सादी भाषा से लेकर लाक्षणिक और अप्रस्तुत विधानों से युक्त

चित्रमयी भाषा का प्रयोग किया है। छायावादी काव्य में अप्रस्तुत विधान और अभिव्यंजना शैली में भी शतशः नवीन प्रयोग किए गए जिसने कि द्विवेदी युग के कवियों की रचनाओं को नकारा और हिन्दी काव्य को एक नवीन रूप दे डाला।

उपर्युक्त सभी प्रकार की विशेषताओं का उल्लेख एवं चित्रण भिन्न–भिन्न कवियों के काव्य में सजीव रूप में दिखाई पड़ता है। इन कवियों में जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, सुमित्रानन्दन पंत, राम कुमार वर्मा, माखन लाल चतुर्वेदी आदि शामिल हैं। वास्तव में प्रसाद जो को ही छायावादी काव्य के प्रवर्त्तक के रूप में स्वीकार किया गया है। यद्यपि पंत, निराला, महादेवी वर्मा आदि कवियों ने छायावादी काव्य में रचनाएं प्रस्तुत की हैं, किन्तु उपर्युक्त सभी प्रवृत्तियों का सफलतापूर्वक चित्रण सर्वप्रथम प्रसाद जी के काव्य में दिखाई पड़ता है।

अतः प्रसाद जी छायावादी काव्य के प्रवर्तक के रूप में स्वीकार किए जा सकते हैं। प्रसाद जी को छायावादी काव्य के प्रवर्तक के रूप में स्वीकार किया जाना इसलिए भी स्वाभाविक है क्योंकि उनके द्वारा रचित सभी कृतियों में छायावादी काव्य की सम्पूर्ण प्रवृत्तियों की झलक स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ती है। प्रसाद जी के काव्य के बारे में जानने से पूर्व उनके व्यक्तित्व को जानना आवश्यक है क्योंकि किसी भी रचनाकार की रचना का पूर्ण आनन्द तभी प्राप्त किया जा सकता है, जब उसके द्वारा रचित काव्य में उसके व्यक्तित्व की छाया का आभास प्राप्त हो। प्रसाद जी सम्पूर्ण रूप में कुशल व्यक्तित्व के मालिक थे। उनके जीवन की आर्थिक स्थितियों ने उनको विपन्न और विषण्ण कर दिया। 'हंस' के आत्म कथानक में उन्होंने स्वयं लिखा है –

''मधुप गुनगुनाकर कह जाता, कौन कहानी यह अपनी,
मुरझा कर गिर रहीं पत्तियां, देखो कितनी आज घनी।''

प्रसाद जो के व्यक्तित्व की झलक उनके द्वारा रचित काव्यों में पूर्ण रूप से दिखाई पड़ती है। प्रसाद जी के काव्य में छायावादी प्रवृत्तियों का अनुसरण बड़े ही सजीव रूप से मिलता है। प्रसाद जी ने अपने काव्य के माध्यम से छायावादी काव्य में नवीनता लाने का परिपक्व प्रयास किया है।

द्विवेदी युग के काव्य में भाषा और भाव दोनों दृष्टियों से स्थूलता का आभास मिलता है। जबकि इसके विपरीत प्रसाद जी ने छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्ति – सूक्ष्मभावाभिव्यक्ति का प्रदर्शन अपने काव्य में सफल रूप से किया है। उन्होंने अपने काव्य में द्विवेदी युग के इतिवृत्तात्मक और स्थूल भावों का खण्डल करके सूक्ष्मता पर अधिक जोर दिया है। उन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर इस प्रकार के कई नवीन प्रयोग करके छायावादी काव्य के स्वरूप को निखारने का प्रयास किया है।

छायावादी काव्य में निहित प्रवृत्ति व्यक्तिवाद के सन्दर्भ में भी प्रसाद जी का काव्य उच्चकोटि का माना गया है। प्रसाद जी की अनेक रचनाओं जैसे– आँसू, प्रेम–पथिक, लहर, कामायनी आदि में व्यक्तिवाद की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। छायावादी काव्य की इस प्रवृत्ति के माध्यम से उन्होंने एक अलग प्रकार का काव्य लोगों के सामने रखा, जिसने कि आधुनिक हिन्दी काव्य को उच्चकोटि का काव्य बना दिया। व्यक्तिवादी काव्य की झलक उनके द्वारा उचित 'कामायनी' में प्राप्त होती है। मनु के चरित्र में मानसिक विकास और बाह्य संघर्ष के रूप में आज के व्यक्ति के विकासोन्मुख व्यक्तित्व की ही अन्तर्कथा निहित है। इस आधुनिक युग का यह एक मात्र प्रतिनिधि महाकाव्य है जो व्यक्तिवाद के विकास और पूर्ण परिणतियुक्त प्रकाश की कहानी प्रस्तुत करता है।

प्रसाद जी के काव्य में प्रकृति के आलम्बन और उद्दीपन दोनों रूपों के दर्शन सशक्त रूप में प्राप्त होते हैं। द्विवेदी युग में प्रकृति के स्वरूप को केवल वर्ण्य–विषय के रूप में ही प्रस्तुत किया गया, जबकि प्रसाद जी ने प्रकति के चित्रण में दोनों प्रकार की अभिव्यक्ति का सहारा लिया है – एक प्रकृति का आलम्बन रूप और दूसरा प्रकृति का उद्दीपन रूप। उन्होंने छायावादी काव्य के अनुरूप ही प्रकृति के अन्तःभाव अर्थात् मन के भाव और बाह्य प्रकृति –– समुद्र, जल, पर्वत, मेघ, नदी, झील, वृक्ष, लता आदि का यथावत् अनुसरण किया है। प्रसाद जी ने प्रकृति–चित्रण को भावों की व्यंजना तथा चित्रण द्वारा सशक्त रूप में प्रस्तुत किया है :–

''तुम तो अवतरति चले जा रहे हो कहीं
तुम्हें सुघर ये दृश्य दिखाते हैं नहीं।
शरद शर्वरी शिशिर प्रभंजन वेग में,
चलना है अविराम तुम्हें उद्वेग में।''

विरह की भावना को भी प्रकृति के माध्यम से सजीव रूप में दृष्टांकित किया गया हैः–

''प्यार भरे श्यामल अम्बर में, जब कोकिल की कूक अधीर,
नृत्य शिथिल बिछली पड़ती है, वहन कर रहा उसे समीर।
तब क्यों तू अपनी आँखों में जल भर कर उदास होता,
और चाहता इतना सुना कोई भी न पास होता ?''

प्रसाद जी के काव्य में जहाँ एक ओर छायावादी काव्य के प्रकृति चित्रण का अनुसरण किया गया है वहीं दूसरी ओर प्रेम और सौन्दर्य का चित्रण भी स्पष्ट रूप में प्रस्तुत हुआ है। प्रसाद जी का प्रेम स्वच्छन्द प्रेम के रूप में उभर कर सामने आता है। प्रसाद जी ने प्रेम को सूक्ष्म और व्यापक रूप में स्वीकार किया है :–

''आत्म समर्पण करो उसी विश्वात्मा को पुलकित होकर,
प्रकृति मिला दो विश्व प्रेम में, विश्व स्वयं ही ईश्वर है।।''
''इस पथ का उद्देश्य नहीं है, श्रांत भवन में टिक रहना,
किन्तु पहुँचना उस सीमा पार, जिसके आगे राह नहीं।।''

प्रसाद जी का प्रेम लौकिक और अलौकिक दोनों ही भावों का स्पर्श करता है। कवि ने यदि प्रेम को सजीव रूप में प्रस्तुत किया है तो उसने प्रेम के साथ–साथ सौन्दर्य को भी यथार्थ रूप में प्रकट किया है। उन्होंने सौन्दर्य की महा शक्ति का संकेत करवाते हुए जीवन की वास्तविक सौंदर्यानुभूति को चित्रांकित किया है :–

''उस दिन तो हम जान सके तो सुन्दर किसको हैं कहते,
तब पहचान सके, किसके हित प्राणी यह दुःख सुख सहते।''

सौन्दर्य की उदात्त भावना का इससे बढ़िया चित्रण कहीं भी प्राप्त न होगा।

प्रसाद ने प्रेम और सौन्दर्य के साथ–साथ विरह की भावना को भी सजीवता प्रदान की है जो कि छायावादी काव्य की मुख्य प्रवृत्ति के रूप में स्वीकार की

गई है। प्रसाद जी ने विरह के उद्‌गार का इस प्रकार से अभिव्यक्त किया है–

'जो घनीभूत पीड़ा थी, मस्तक में स्मृति सी छाई,
दुर्दिन में आँसू बन कर वह आज बरसने आई।'

प्रसाद जी ने अपने काव्य में वियोग के साथ–साथ संयोग पर भी उचित रूप से प्रकाश डाला है। 'लहर' नामक कविता में उन्होंने संयोग का चित्रण बड़ी सजीवता से किया है–

''जब कुसुम सी उषा खिलेगी, मेरी लघु प्राची में।''

द्विवेदी युग में नारी की स्वतन्त्रता को बहुत सीमित रूप मे स्वीकार किया गया है परन्तु इसके विपरीत छायावादी काव्य में नारी के स्वरूप को अलग–अलग प्रकार से प्रस्तुत किया गया है। प्रसाद जी ने भी नारी के विभिन्न रूपों का चित्रण छायावादी काव्य के स्वरूप के अनुरूप ही देने का सफल प्रयास किया है। नारी के सौन्दर्य को उन्होंने प्रकृति के स्वरूप के साथ आलंबित किया है। 'आँसू' में नारी सौन्दर्य का चित्रण कुछ इस प्रकार से प्रस्तुत किया गया है :–

''शशि मुख पर घूँघट डाले, अंचल में दीप छिपाए,
जीवन की गोधूली में, कौतूहल से तुम आए।''

इसी प्रकार उन्होंने नारी को श्रद्धा, ममता, कोमल, शक्तिशाली, दया की भावनाओं से ओत–प्रोत रूपों में स्वीकृत किया है। वे कहते हैं :–

''नारी माया–ममता का बल,
वह शक्तिमयी छाया शीतल,
फिर कौन क्षमा कर दे निश्छल,
जिससे यह धन्य बने भूतल।''

उपर्युक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि प्रसाद जी ने नारी के स्वरूप को अलग–अलग रूपों में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।

प्रसाद जी की भाषा में प्रतीकात्मकता, व्यंजनात्मकता, लाक्षणिकता आदि का समावेश पूर्ण रूप से उपलब्ध है। प्रसाद जी की भाषा छायावादी काव्य की सूक्ष्म भाषा के अनुरूप ही प्रस्तुत की गई है जबकि द्विवेदी युग में यह केवल स्थूल रूप में ही प्रस्तुत होती थी। प्रसाद की आरम्भिक कृतियों में ब्रज भाषा का प्रभाव दिखाई पड़ता है। यद्यपि इन्होंने अपनी आरम्भिक कृतियों में ब्रज भाषा, रीतिकालीन तथा द्विवेदी युगीन भाषा को छोड़ कर खड़ी बोली का प्रयोग भी किया है। इनकी भाषा में नवीनता का समावेश स्पष्ट दिखाई पड़ता है। इनकी भाषा द्विवेदी युग की भाषा के विपरीत मधुर और कोमलता से परिपूर्ण है। इनके काव्य में लाक्षणिकता की प्रवृत्ति के दर्शन भी सशक्त रूप में विद्यमान हैं :–

''चंचला स्नान कर आये चन्द्रिका पर्व में जैसी,
उस पावन तन की शोभा, आलोक मधुर थी ऐसी।''

प्रसाद जो ने अपने काव्य में द्विवेदी युगीन काव्य के विपरीत अनेक नए अलंकारों का प्रयोग किया। इनमें उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपकातिशयोक्ति, विशेषण–विपयर्य, पुनरारुक्ति आदि प्रमुख हैं। प्रसाद जी के काव्य में प्रकृति निर्जीव एवं जड़ रूप में चित्रित नहीं हुई है। अपितु उसमें मानवीय भावनाआ का आरोप कर उसे सजीव एवं जीवन्त रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसलिए प्रकृति चित्रण का मुख्य आधार मानवीकरण अलंकार को ही बनाया गया है। इसका सजीव चित्रण अग्रलिखित पंक्तियों में स्पष्ट झलकता है–

सिन्धु सेज पर धरा वधू अब तनिक संकुचित बैठी सी,
प्रणय निशा की हल–चल स्मृति में मान किए सी, ऐंठी सी।।

रस की दृष्टि से प्रसाद के काव्य में, मुख्यतः श्रृंगार, करुण और शांत रस का समावेश दिखाई पड़ता है। निम्न पंक्तियों में शांत रस और श्रृंगार रस का सजीव चित्रांकन किया गया है–

दुःख क्या था उनको मेरा,
जो सुख लेकर यों भागे।
साते में चुम्बन लेकर,
जब रोम तनिक–सा जागे।

द्विवेदी युग में लावनी, कजली आदि लोक प्रचलित छन्दों का प्रयोग हुआ है। प्रसाद जी ने उसके विपरीत कुछ नए छन्दों को प्रस्फुटित किया, जिनमें मुख्य रूप से तुकान्त, अतुकान्त, बाला आदि शामिल हैं। छन्दों के इस नवीन प्रयोग में प्रसाद जी के भावों के साथ सामंजस्य पूर्ण रूप से स्थापित होता प्रतीत होता है।

प्रसाद के काव्य में अनेक ऐसी रचनाएं मिलती हैं जिनमें छायावाद की झलक स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ती है। इस दृष्टि से प्रसाद द्वारा रचित काव्यों आँसू, लहर, प्रेम–पथिक, कामायनी आदि का उल्लेख विशेष रूप से किया जा सकता है परन्तु 'झरना' को प्रसाद जी की प्रथम छायावादी कृति होने का श्रेय प्राप्त है क्योंकि इस कृति की रचना द्वारा ही उन्होंने छायावादी काव्य में प्रवेश किया। यह कहना उपयुक्त प्रतीत होता है कि 'झरना' की रचना द्वारा प्रसाद जी ने हिन्दी में छायावादी काव्य का श्री गणेश किया। इसलिए हिन्दी के अधिकांश विद्वानों ने 'झरना' को छायावाद की प्रथम कृति होने का सौभाग्य प्रदान किया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार प्रसाद हिन्दी काव्य जगत में प्रसाद छायावादी युग के स्रष्टा माने गए हैं उनका काव्य द्विवेदी युग के प्रति संघर्ष और युग परिवर्तन में सहायक बन पड़ा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रसाद ग्रंथावली – 'कामायनी' (लज्जा सर्ग), पृष्ठ–३०६।
2. प्रसाद – काव्य–विवेचन – डॉ. हरदेव बाहरी, पृष्ठ ३
3. कानन कुसुम, पृष्ठ–११०।
4. लहर, पृष्ठ–२५१।
5. प्रेम पथिक, पृष्ठ–७०।
6. कवि प्रसाद – प्रो. भारत भूषण 'सरोज', पृष्ठ १६८।
7. कामायनी (निर्वेद सर्ग) पष्ठ–३५२।
8. आंसू – पृष्ठ २०८।
9. लहर – पृष्ठ २४६
10. आंसू –पृष्ठ २०६
11. आंसू – पृष्ठ – २०८
12. कामायनी (आश सर्ग) पृष्ठ २८३
13. हिन्दी काव्य में छायावाद – श्री दीना नाथ 'शरण' – पृष्ठ – २३५